झारखंडी साझा सांस्कृतिक आंदोलन में डॉ एके झा का योगदान

[1]डॉ. लम्बोदर महतो

शोध-सार

खोरठा भाषा-साहित्य के मूर्धन्य विद्वान और अगुआ संस्कृतिकर्मी डॉ अजित कुमार झा (एके झा) साझा सांस्कृतिक आंदोलन के एक अजेय प्रवक्ता थे। उन्होंने विभिन्न विधाओं में दर्जनों पुस्तकें लिखी है। खासबात तो यह है कि अधिकतर किताबों का प्रकाशन अपने पैसे खर्च कर के किया है। खोरठा क्षेत्र में भाषा प्रेमियों और रचनाकारों को संगठित करने के लिए उन्होंने कई भाषायी सम्मेलनों, सेमिनारों, सभाओं के साथ-साथ आंदोलनात्मक पहलकदमियां लीं। उन्होंने अपने भाषायी वैज्ञानिकता, साहित्यिक सृजन, सांगठनिक कौशल और प्रभावी वक्तव्य क्षमता से झारखंड के खोरठांचल के समस्त भाग को आंदोलित किया। उन्हें एक भाषिक समाज के रूप में संगठित होने के लिए प्रेरित किया। रामगढ़, बोकारो, पतरातु, भेंडरा, गिरिडीह, धनबाद आदि खोरठा क्षेत्र में जो सैंकड़ों रचनाकार और दर्जनों खोरठा साहित्य के संगठन व मंच सक्रिय हैं, वह डॉ. झा के अथक परिश्रम का ही परिणाम है।

मूल शब्द : साझा सांस्कृतिक आंदोलन , खोरठा भाषा-साहित्य, झारखंड, लोकसाहित्य ।

लेखक

[1]झारखंड विधान सभा सदस्य ,पी एच् डी, रांची विश्वविद्यालय रांची ।

प्रस्तावना

आकर्षक एवं दृढ व्यक्तित्व के स्वामी डॉ अजित कुमार झा सहज एवं साधारण जीवन शैली जीने वाले थे I उनके व्यक्तित्व में दिखावा या ढकोसला नहीं था । डॉ. झा खोरठा साहित्य में असाधारण शख्सियत के रूप में हमेशा याद किये जायेंगे I अखड़ा के विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों और सभी आंदोलनकारी गतिविधियों में हमेशा वे अगुआ पांत में रहे। ब्राह्मणवाद को उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के सांस्कृतिक संघर्ष में सबसे बड़ा अवरोध मानने वाले डॉ. झा ने अपनी विद्वता और अनुभव से 21वीं सदी के पहले दशक में उभरे सामूहिक झारखंडी सांस्कृतिक मंच अखड़ा को भी हमेशा हर तरह का मार्गदर्शन किया। साहित्यकार अश्विनी कुमार पंकज कहते हैं कि अपनी कुछ व्यक्गित आदतों, जिससे कि उनके जैसे लोग कभी-कभार उद्वेलित हो जाते थे, के बावजूद साझा सांस्कृतिक आंदोलन के हर बुलावे को वह गंभीरता

से लेते थे और चाहे उस समय उनकी जैसी भी परिस्थिति रहती थी, उसमें शामिल होने जरूर चले आते थे। साधारण होते हुए भी निश्चय ही वे एक असाधारण प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व थे। ऐसे ही लोग झारखंडी संस्कृति की सामूहिकता के प्राण-आधार रहे हैं। झारखंडी जनता जिनके ऐतिहासिक अवदानों के लिए बार-बार जोहार कहेंगे, उनमें डॉ एके झा सबसे अग्रिम पंक्ति में होंगे।

साझा सांस्कृतिक आंदोलन में डॉ एके झा का योगदान

श्री पंकज के अनुसार नब्बे के दशक में जब झारखंड आंदोलन से उनका संबंध अंतरंग हो गया था, तब पहली बार डॉ. एके झा का नाम सुना था। अब वे हमारे बीच नहीं रहे है। उनके नहीं होने का मतलब सिर्फ किसी एक भाषाविद्, लेखक, संस्कृतिकर्मी और मौसम विज्ञानी की क्षति नहीं थी बल्कि झारखंड के एक ऐसे सांस्कृतिक समुच्चय का खो जाना था, जो बमुश्किल से समाज को हासिल होता है। विशेषकर झारखंड जैसे उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं वाले समाज को। डॉ. झा झारखंडी अस्मिता के लिए युद्धरत जनगण के एक ऐसे देशज सांस्कृतिक कमांडर थे, जो आजीवन अपनी मातृभाषा खोरठा ही नहीं वरन सभी झारखंडी भाषाओं के पक्ष में प्रबलता के साथ खड़ा रहे। तमाम मतभेदों और असहमतियों के बावजूद साझा सांस्कृतिक आंदोलन के वे एक अजेय प्रवक्ता थे। वे झारखंडी जीवनदर्शन और साहित्य को 'मानववाद' की नैसर्गिक आदिम विचार भूमि मानते थे।

खोरठा साहत्य में डॉ अजित कुमार झा (एके झा) एक असाधारण शख्सियत के रूप में हमेशा याद किये जायेंगे। वह साहित्य के क्षेत्र में जितने काबिल थे, उतना ही उनका सादा जीवन था। दिखावा ओर दुनियावी संबंधों के निर्वाह में हमेशा लापरवार थे। उसको जानने वालों को आश्चर्य होता कोई आदमी हर समय इतना गंभीर कैसे रह सकता है? सदा अपनी सोच में मगन, अपने काम में लिप्त। दिखने में इतने मामूली कि किसी को यकीन करना मुश्किल होता था कि यह वही असाधारण प्रतिभा सम्पन्न, मजबूत व न हारने वाला लड़ाका है। झारखंड और देश के लुटेरों के प्रति उनके मन में असीम घृणा थी। वह झारखण्ड के भूगोल, इतिहास, भाषा-संस्कृति, जंगल, जमीन, जलवायू के साथ आत्मीय रूप से जुड़े हुए थे I

खोरठा लोकसाहित्य में डॉ. झा का योगदान

खोरठा लोक साहित्य की बात आते ही डॉ अजित कुमार झा (एके झा) का नाम सबसे पहले लिया जाता है। वह निर्विवाद रूप से खोरठा के सर्वमान्य भाषाविद थे। उन्हें अपनी भाषा की गहरी चिंता रहती थी। विकास की परंपरा में भाषा लगातार परिवर्तित होती रहती है। काल विशेष के अनेक बहुप्रचलित शब्द पीछे छूट जाते हैं और अनेक नये दूसरी भाषाओं के शब्द बोल-चाल में प्रवेश कर जाते हैं। यह जीवन शैली में बदलाव, संचार माध्यम, यातायात तथा सामाजिक व्यवस्था के कारण होता है। एके झा इन सब के प्रति अत्यंत सावधान थे। ऐसे समय में जब अनेक खोरठा

भाषी मातृभाषा का प्रयोग बंद कर चुके थे, घर में भी हिन्दी या बांगला ही बोलते थे, तब झा जी हमेशा लोगों से मातृभाषा में बात करते और करने के लिए प्रेरित करते थे।

खोरठा के कई विद्वान हिन्दी की तरह बल्कि उसकी नकल करते हुए व्याकरण, रस, अलंकार, मुहावरे और लोकोक्तियों पर पुस्तकें लिख रहे थे। परिभाषायें रच रहे थे। किन्तृ एके झा ने खोरठा को एक पूरा का पूरा भाषा-शास्त्र दिया। लोकभाषा के माध्यम से लोक को प्रतिष्ठित किया। उनके इय योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

कई लोग जो झारखंड के सांस्कृतिक आंदोलन का अंतरंग हिस्सा रहे हैं, वे डॉ. एके झा के साझा सांस्कृतिक थ्योरी से अच्छी तरह से वाकिफ हैं। यह अलग बात है कि उनकी थ्योरी जो भविष्य की वास्तविकता है हमने अब भी उस पर अपनी आंखें मूंद रखी हैं। 1993 के अंत में रांची में जब 'झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा की दो दिवसीय स्थापना बैठक हुई थी, तब भी उन्होंने अपनी थ्योरी को सबके सामने रखा था और यह आशा व्यक्त की थी कि 'अखड़ा' इस साझेपन और सामूहिकता को आगे ले जाएगा। अखड़ा ने आगे चलकर निःसंदेह उनके इस विश्वास की रक्षा की और साझा सांस्कृतिक आंदोलन की झारखंडी परंपरा को और विस्तारित किया। खोरठा भाषा-साहित्य को उनकी अमूल्य देन के साथ-साथ झारखंडी एकता का जो यह व्यापक दृष्टिकोण है, वही डॉ. झा की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

वह भाषा के प्रति इतने समर्पित थे कि इसको अलावा जीवन में उन्हें और कुछ दिखाई नहीं दिया। विषम परिस्थितियों में भी खोरठा की गाड़ी को अपने कंधों पर खींचकर आगे बढ़ाते रहे। उनके साथ चलने वाले भी उनके इस समर्पण से अचंभित थे। पर हर कोई उनके जिद और जुनून के आगे हमेशा नतमस्तक रहे।

खोरठा साहित्य को समृद्ध बनाने में डॉ एके झा की भूमिका

किसी भी भाषा के विकास में उसकी साहित्यिक समृद्धि को एक बड़ा पैमाना माना जाता है। अगर किसी भाषा में उसकी साहित्य मजबूत नहीं है तो वह भाषा महत्वपूर्ण होते हुए भी स्वतः कमजोर पड़ जाती है। कई भाषाओं ने अपनी साहित्य की बदौलत ही मजबूती पाई है और अपना विस्तार किया है। खोरठा भी वैसी ही भाषाओं में एक है। इस भाषा को स्थापित करने से लेकर इसके प्रचार-प्रसार में खोरठा साहित्य का सबसे बड़ा योगदान रहा है और उसमें डॉ अजित कुमार झा को सबसे बड़ा श्रेय जाता है। श्रीनिवास पानुरी के बाद खोरठा में डॉ एके झा को सबसे ऊंचा दर्जा मिला हुआ है। इन्होंने अपने जीवन काल में खोरठा साहित्य को वो ऊंचाई दी जिसकी कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। एक वह दौर था, जब खोरठा की खुले तौर पर बात करने वाले बहुत कम लोग थे। भले ही यह खोरठा क्षेत्र है है और खोरठा बोलने वालों की संख्या लाखों में रही है, पर पहले खुले तौर पर खोरठा की चर्चा करना खोरठा भाषा भी पसंद नहीं करते थे। लेकिन झा जी ने खोरठा को स्थापित करने के लिए आंदोलन किया, लड़ाई लड़ाई, साहित्य सर्जन किया और बड़े-

बड़े मंचों में भी पूरी मजबूती के साथ खोरठा की बात रखी। उनके इस जीवन काल में खोरठा का व्यापक प्रचार प्रसार के साथ साथ साहित्य सृजन का काम भी तेजी से हुआ है। वैसे तो आज दर्जनों लेखक और साहित्यकारों ने खोरठा में साहित्य सृजन का काम किया है, पर एके झा द्वारा लिखित पुस्तकें खोरठा भाषा की विशेष धरोहर है। उनकी पुस्तकों की अपनी अहमियत है। उसमें खोरठा का वह सार तत्व समाहित है, जो अन्य लेखकों व साहित्यकारों के बस की बात नहीं है। उनकी लेखनी और साहित्य में खांटी खोरठा देखने को मिलती है। खोरठा भाषा को गुमनामी से निकाल कर जनमानस की भाषा तक पहुंचाने में डा. ए के झा का विशेष योगदान रहा है। इन्होंने रात दिन एक कर खोरठा को बुलंदियों तक पहुंचाया। इंडियन साइंस के कई सेमिनार में इन्होंने खोरठा आलेख पढ़ कर खोरठा भाषा को झारखंड के मुख्य क्षेत्रीय भाषा के रूप में पहचान दिलाने में योगदान दिया है।

1985 में लिखित उनकी खोरठा सहित सदानी बेयाकरन की तुलना आज भी खोरठा की किसी अन्य पुस्तक से नहीं की जा सकती है। इसमें खोरठा व्याकरण को जिस तरीके से झा जी ने लिखा है, वह खोरठा को मजबूत बनाने में काफी सहायक साबित हुआ है। यह बताने की जरूरत नहीं कि किसी भाषा की समृद्धि में उसके व्याकरण का क्या महत्व है। झा जी की यह पुस्तक उसी श्रेणी में आती है। उनकी अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकों में खोरठा काठें गइदेक खँड़ी (निबंध, 1983), खोरठा काठें पइदेक खँड़ी (कविता, 1983), एक टोकी फूल (लोकगीत संकलन, 1984), समाजेक सरजुइत निसइन (काव्य, 1987), मेकामेकी ने मेटमाट (नाटक, 1991, कबिता पुरान (बालकविता, 1995), सइर सगरठ (उपन्यास,2014).आदि शामिल हैं। इसके अलावा उन्होंने अनेक पुस्तकों का संपादन भी किया है। डा. ए के झा ने खोरठा की पत्रिका "**तितकी**" का संपादन 1983 से 1987 तक किया है। आज विश्वविद्यालय स्तर पर इनकी कीर्ति पढ़ी जा रही है।

निष्कर्ष

भाषा किसी भी संस्कृति के प्रेषण का माध्यम होता है तथा भाषा एवं साहित्य की समृद्धि, समृद्ध संस्कृति की पहचान होती है I खोरठा भाषा एवं साहित्य झारखंडी साझा संस्कृति की पहचान हैI इसके प्रचार प्रसार से ही झारखण्ड के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की नीव रखी जा सकती हैI खोरठा लोकसाहित्य में डॉ. झा के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता हैI झा जी से प्रेरित होकर खोरठा साहित्य को और भी मजबूती की ओर ले जाने की जरूरत है।

सन्दर्भ सूची

ओहदार बी ऍन (2017) खोरठा भाषा एवं साहित्य उद्भव एवं विकास, मार्गदर्शन पब्लिकेशन I

झा, ए के (2022) खोरठा साहित्य सदानिक व्याकरण, सुमित प्रकाशन I

https://gyantarang.com/khortha-writer/

फोटो : डॉ अजित कुमार झा

लेखक परिचय

डॉ लम्बोदर महतो झारखंड के एक भारतीय राजनीतिज्ञ और ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन (आजसू) पार्टी झारखंड के महासचिव हैं। सम्प्रति गोमिया निर्वाचन क्षेत्र से झारखंड विधान सभा के सदस्य हैं। डॉ महतो ने रांची विश्वविद्यालय रांची से पी. एच्. डी. की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने झारखंड प्रशासनिक सेवा में भी काम किया है ।